'श्रीमद्भागवत' में कहा है कि मनुष्य चाहे विषय-वासना से बिल्कुल मुक्त हो, नाना प्राकृत अभिलाषाओं से पूर्ण हो, भवबन्धन से मुक्ति चाहता हो अथवा विषयभोग से प्राप्त होने वाली इन्द्रियतृप्ति की इच्छा से रहित शुद्ध भक्त हो, सब अवस्थाओं में भगवान् वासेदेव के शरणागत होकर उन्हीं का भजन करे।

श्रीमद्भागवत में भी कथन है कि आध्यात्मिक ज्ञान के अल्पज्ञ मनुष्य ही विषयवासना की क्षणिक पूर्ति के देवताओं का आश्रय लेते हैं। सामान्य रूप से इस कोटि के लोग भगवान् की शरण में नहीं जाते, क्योंकि रजोगुण-तमोगुण से कलुषित होने के कारण उन्हें विविध देवताओं की उपासना अधिक रुचिकर होती है और देवोपासना के विधि-विधान का पालन करने में सन्तोष का अनुभव होता है। तुच्छ मनोरथों द्वारा प्रेरित हुए ये देवोपासक परम लक्ष्य की प्राप्ति के पथ को नहीं जानते। परन्तु भगवद्भक्त सन्मार्ग से भ्रष्ट नहीं हो सकता। वेदों में अलग-अलग उद्देश्यों के लिए नाना देवताओं की उपासना का विधान है। जैसे, रोगी के लिए सूर्योपासना बतायी गयी है। इससे अभक्त समझ बैठते हैं कि कुछ कार्यों के लिए देवता भगवान् श्रीकृष्ण से श्रेष्ठ हैं। परन्तु शुद्ध भक्त जानता है कि परमेश्वर श्रीकृष्ण सबके एकमात्र स्वामी हैं। 'चैतन्यचरितामृत' के अनुसार एकमात्र भगवान् श्रीकृष्ण ही स्वामी हैं, और सब उनके सेवक हैं। अतः शुद्ध भक्त अपनी सांसारिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए देवताओं से कभी याचना नहीं करता। वह सदा श्रीभगवान् पर निर्भर रहता है और भगवान् स्वयं जो कुछ भी दें, उस में उसे परम सन्तोष की अनुभूति होती है।

यो यो यां यां तनुं भक्तः श्रद्धयार्चितुमिच्छति।
तस्य तस्याचलां श्रद्धां तामेव विदधाम्यहम्।।२१।।

यः=जो; **यः**=जो; **याम्**=जिस; **याम्**=जिस; **तनुम्**=देवरूप को; **भक्तः**=सकाम भक्त; **श्रद्धया**=श्रद्धापूर्वक; **अर्चितुम्**=पूजने की; **इच्छति**=इच्छा करता है; **तस्य**=उस; **तस्य**=उसकी; **अचलाम्**=स्थिर; **श्रद्धाम्**=श्रद्धा को; **ताम् एव**=उस देवता में ही; **विदधामि**=कर देता हूँ; **अहम्**=मैं।

अनुवाद

मैं अन्तर्यामी परमात्मा रूप से जीवमात्र के हृदय में हूँ; इसलिए जो जिस इच्छा से जिस देवरूप को श्रद्धा से पूजने की इच्छा करता है, मैं उसकी श्रद्धा को उसी देवता में स्थिर कर देता हूँ।।२१।।

तात्पर्य

ईश्वर ने सबको स्वतन्त्रता दी है। इसलिए यदि किसी को विषयभोग की इच्छा हो, जिसके लिए वह हृदय से चाहे कि अमुक देवता उसे अमुक सुविधा प्रदान करे, तो परमेश्वर श्रीकृष्ण, जो परमात्मा रूप से प्राणीमात्र के अन्तर्यामी हैं, उसके मनोभाव को जान जाते हैं और उसकी अनुकूलता का विधान कर देते हैं। सम्पूर्ण जीवों के